CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीः

श्रीमहासरस्वत्यै नमः

या विद्या शिवकेशवादिजननी या वै जगन्मोहिनी
या पञ्चप्रणवद्विरेफनलिनी या चित्कलामालिनी ।
या ब्रह्मादि पिपीलिकान्ततनुषु प्रोता जगत्साक्षिणी
सा पायात्परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥

जन्म-पत्रिका

श्रीमान् _____

_____

निर्माता—

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

सोलन (हिमाचल प्रदेश)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

स्वतन्त्र भारत की राष्ट्रीय सरकार के मन्त्रियों, गवर्नरों, नेताओं, धर्माचार्यों और राजा महाराजा रईसवर्ग आदि देशके अनेक श्रेष्ठ पुरुषों से स्नेह एवं विशिष्ट सम्मान प्राप्त, भारत के ख्यातिप्राप्त लोकप्रिय 'श्रीस्वाध्याय' त्रैमासिक पत्र और सुप्रसिद्ध 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग' के प्रधान-सम्पादक ज्योतिष-मार्तण्ड ज्योतिर्विद्यारत्न, ज्योतिःशास्त्री, गणकरत्न, दैवज्ञमणि, पण्डित-भूषणादि पदवी विभूषित भारतके सुविख्यात

ज्योतिर्विज्ञानाचार्य—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

अध्यक्ष—

श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग-ज्योतिष कार्यालय

सोलन (शिमला)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

विपन्नाशकं तोषकं सज्जनानां
सुखं दर्शयन्तं सुधामज्जनानाम् ।
सदा दुःखसन्दोहदोलायमानाः
जनाः यं भजन्ते भजे तं गणेशम् ॥१॥

वृन्दारका यस्य भवन्ति भृङ्गाः,
मन्दाकिनी यन्मकरन्द बिन्दुः ।
तत्रारविन्दाक्ष पदारविन्दं
वन्दे चतुर्वर्ग चतुष्पदं तत् ॥ २ ॥

काव्याटवी विहरण-प्रिय-मानसानां
लोकोत्तर प्रथित कीर्ति कलाभिभाजाम् ।
सन्मानसे विहरिणी कवि कोकिलानां
वाग्देवता सपदि मे सुगिरं व्यनक्तु ॥३॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीः

॥ जन्म पत्री प्रयोजनम् ॥

श्रीजन्मपत्री शुभदीपकेन व्यक्तं भवेद्भाविफलं समग्रम् ।
क्षपा प्रदीपेन यथा गृहस्थं घटादिजातं प्रकटत्वमेति ॥ १ ॥

स्वकीय भाग्या न्यवगन्तुमुच्चैरापत्पयोराशिमपि प्रत्तर्तुम् ।
धनं तथोपार्जयितुं नराणां होरां विना नान्य इहास्त्युपायः ॥ २ ॥

॥ मङ्गला चरणम् ॥

कल्याणानि दिवामणिः सुललितां कान्तिं कलानां निधिः ।
लक्ष्मीं क्ष्मातनयो बुधश्च बुधतां जीवश्चिरं जीविताम् ॥
साम्राज्यं भृगुजोऽर्कजो विजयतां राहुर्बहूत्कर्षताम् ।
केतुर्यच्छतु तस्य वाञ्छितमयं पत्री यदीयोत्तमा ॥ ३ ॥

अतसी कुसुमोपमेयकान्तिर्यमुनाकूलकदम्बमूलमूर्तिः ।
नवगोपवधू विलास शाली वनमाली वितनोतुमङ्गलंवः ॥४॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

॥ अथ जन्मपत्री लेखनम् ॥

स्वस्ति श्री सौख्यधात्री सुत जय जननी तुष्टि पुष्टि प्रदात्री ।
माङ्गल्योत्साहकर्त्री गतभवसदसत्कर्मणा व्यञ्जयित्री ॥
नाना सम्पद्विधात्री धन कुल यशषामायुषां वर्द्धयित्री ।
दुष्टापद्विघ्नहर्त्री गुणगणवसतिर्लिख्यते जन्मपत्री ॥

अथ श्रीमन्नृपतिप्रवर वीर विजयिनो विक्रमादित्यस्य राज्य शासन समयादतीताब्दाः तत्र शाकेशालिवाहनस्य गोलावलम्बिने येनगते च भगवतिभास्करे ऋतौमासानांमासोत्तमे मासे शुभे पक्षे शुभतिथौ घट्यः पलानि वासरे नक्षत्रे घट्यः पलानि योगे घट्यः पलानि तात्कालिके करणे राशिस्थिते चन्द्रे दैवत्ये योनौ गणे वर्गे नाड़ी र्क गतांशाः सौर तिथि (प्र०) तत्र दिन प्रमाणम् घट्यः पलानि रात्रि प्रमाणम् घट्यः पलानि अयनाशाः गतर्क्षं घट्यः पलानि सर्वर्क्षं घट्यः पलानि श्रीमन्मार्तण्डमण्डलोदयात्सावनेष्टप्रमाणंघट्यः पलानि एतत्समये लग्नोदये शुभग्रहावलोकितायां शिवंकरिवेलायां

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोत्रे मण्डलान्तर्गत वास्तव्यानां श्री तनुजुषां श्रीमतां जी महोदयानां स्वपाणिगृहीत धर्मपत्न्यां दक्षिण कुक्षौ रत्नं समजनि। अवकहड़ा चक्रानुसारेण नक्षत्रस्य चरण जन्मवशान्नाक्षत्रिकं नाम अक्षरा दिकं प्रसिद्धम्, व्यावहारिकं वा शुभं भूयात्।

श्रीकृष्ण जन्माङ्गम् जन्माङ्गम्

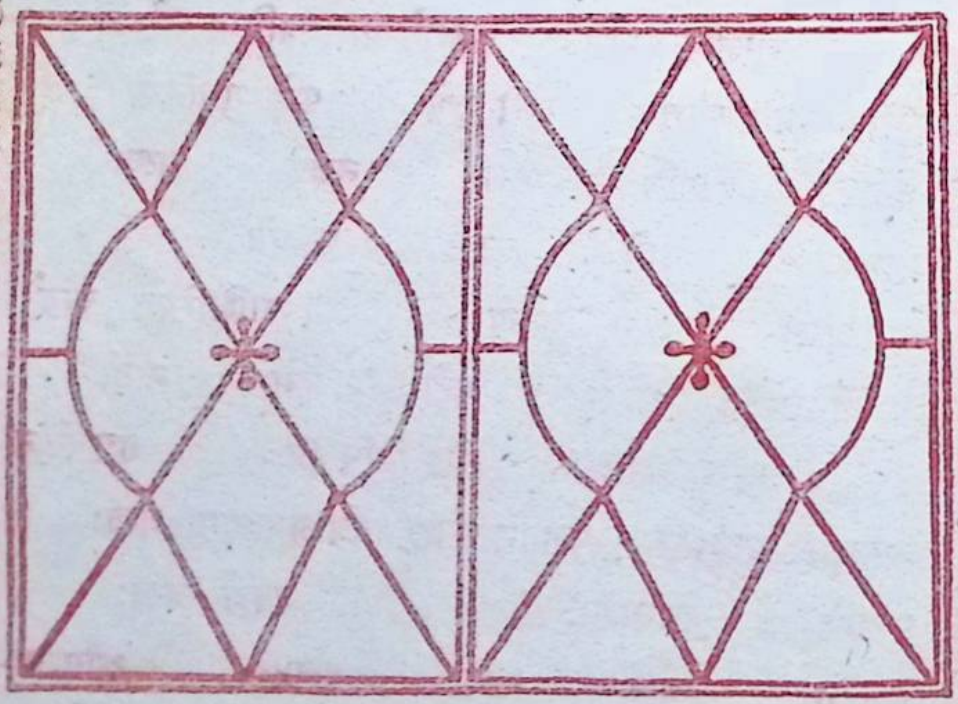

जन्म ता० मास सन् इ० जन्म समय

स्टैण्डर्ड टाइम घण्टा मिनट जन्म स्थान

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्र लग्न प्रयोजनम्

लग्नं देहो वर्गषट्काङ्गकानि
प्राणश्चन्द्रो धातुरन्ये ग्रहेन्द्राः।
प्राणे नष्टे सर्व नष्टं विचिन्त्यं
तस्माच्चिन्त्यं चन्द्रराशि प्रधानम् ॥

॥ अथ चन्द्र लग्नम् ॥

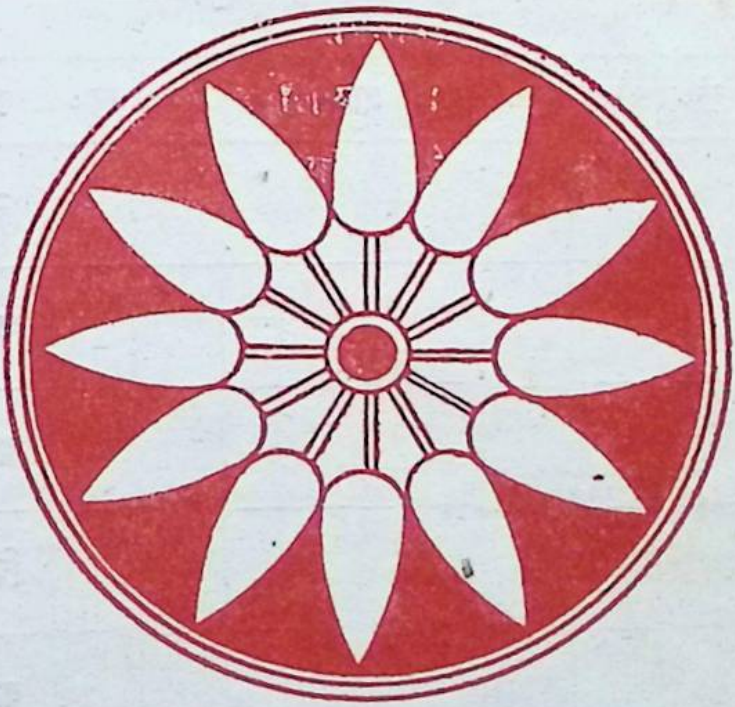

चन्द्र राशि फलम्

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्पष्ट ग्रह प्रयोजनम्

विना ग्रहैः स्पष्ट तेरेर्न किंचित्फलं प्रवक्तुं नितराँ क्षमः स्यात् अतः खगानां बल साधतार्थ क्रमं बुधेद्दैव विदाँ हिताय ॥

॥ सगतिकाः ग्रहाः प्रस्फुटाः ॥

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा०	ल०	ग्रहा
									रा०
									अ०
									क०
									वि०
									क०
									वि०

यात्रा विवाहोत्सव जातकादौ खेटैस्स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम् ।
स्यात्प्रोच्यते तेन नमश्चराणां स्फुट क्रिया दृक् गणितैक्य कृद्या ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्मलग्न प्रयोजनमाह

यथा त नूत्पादनमन्तरैव, पराङ्ग सम्पाद-
नमत्रमिथ्या । बिना बिलग्र पर
भाव सिद्धिं ततः प्रवक्ष्येहिविलग्रसिद्धिम् ॥१॥

संधिसहितम् द्वादशभाव चक्रमिदम्

१	सं०	२	सं०	३	सं०	४	सं०	५	सं०	६	सं०
७	सं०	८	सं०	९	सं०	१०	सं०	११	सं०	१२	सं०

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ चलिताङ्गम् ॥

विना चलित चक्रेण वृथोक्तं भावजं फलं ।
नारी यौवन सम्पन्ना पति हीना न शोभते ॥

❋ चलिताङ्गम् ❋

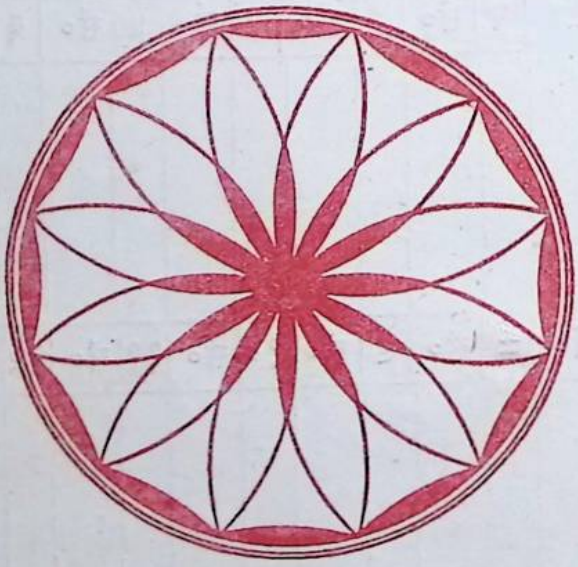

॥ ग्रहाणां वालाद्यवस्था चक्रम् ॥

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	ग्रहाः
								अवस्था

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वान्ताधीनं कर्मजातं नराणां,
भावाधीनं खेचराणां फलं यत् ।
तस्मादुक्तं सन्धिभाव स्फुटत्वम्,
तन्मुख्यत्वं जन्मयानादिषुस्यात् ॥१॥

॥ होरा लग्न प्रयोजनम् ॥

लग्नेनूनं चिंतयेद्देह भावम् ।
होरायां वै संपदाद्यं सुखं च ॥

* होरा लग्नम् *

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ द्रेष्काण चक्र प्रयोजनम् ॥

द्रेष्काणे स्यात् भातृजं भावसौख्यम्

* द्रेष्काण चक्रम् *

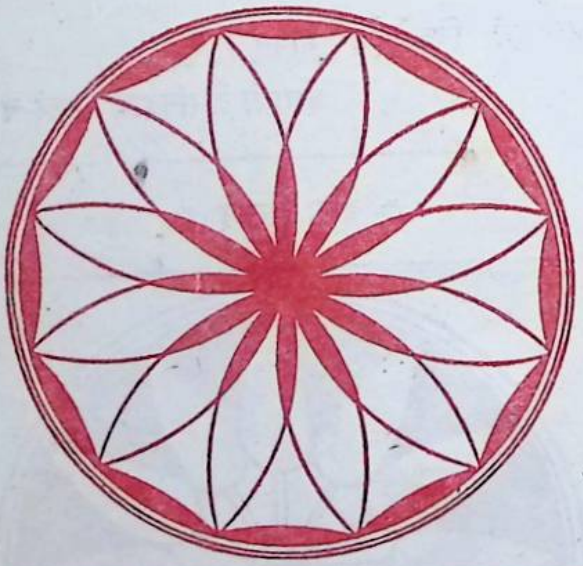

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ नवमांश चक्र प्रयोजनम् ॥

नूनं नंवाशेऽपि कलत्र सौख्यम् ।
लग्न नवांशपतुल्यतनुः स्यात् ॥

❋ नवमांश चक्रम् ❋

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ विंशोत्तरी महादशा चक्रम् ॥

									ग्रहाः
									वर्ष
									मास
									दिन
									घटि
									पलानि
									सम्वत्
									सू० रा०
									अंश
									कला
									विफला

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ग्रहस्यान्तर्दशा चक्रम् ॥

									ग्रहाः
									वर्ष
									मास
									दिन
									फलानि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ग्रहस्यान्तर्दशा चक्रम् ॥

									ग्रहाः
									वर्ष
									मास
									दिन
									फलानि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ग्रहस्यान्तर्दशा चक्रम् ॥

									ग्रहाः
									वर्ष
									मास
									दिन
									फलानि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ग्रहस्यान्तर्दशा चक्रम् ॥

									ग्रहाः
									वर्ष
									मास
									दिन
									फलानि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ग्रहस्यान्तर्दशा चक्रम् ॥

									ग्रहाः
									वर्ष
									मास
									दिन
									फलानि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ग्रहस्यान्तर्दशा चक्रम् ॥

									ग्रहाः
									वर्ष
									मास
									दिन
									फलानि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग-ज्योतिष-कार्यालय के नियम

इस कार्यालय में ज्योतिष-सम्बन्धी प्रत्येक कार्य शास्त्रानुसार सन्तोष-जनक रीति से किये जाते हैं। जन्मपत्र वर्षफलमें आयुः, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीरका सुख दुःख, भाग्योदयादिका पूरा-पूरा विचार शास्त्र-प्रमाणानुसार लिखा जाता है। प्राचीन तथा नवीन दोनों पक्षों से गणित होता है। दोनों पद्धतियों का पारिश्रमिक (फीस) भिन्न भिन्न है। जन्मपत्र बनानेकी फीस २१) से १००) रु० तक। वर्षफल ११) से १००) रु० तक। एक भावका सूक्ष्म विचार (यथार्थ निर्णय) के १५) आयुर्विचार (अंशायुर्गणित, मारकेश-विचार, मृत्यु-समय-स्थान-रोग-मोहादिके निर्णय सहित) राजा महाराजा एवं सेठ साहुकारों से १२५) सर्वसाधारण से ३१) रु०। टेवा बनवाने की फीस ५) रु०। भारतसे बाहर अन्य देशों में उत्पन्न हुए बालकों के शुद्ध इष्ट और केवल लग्नकुण्डली बनानेकी फीस १५) रुपया। विवादास्पद प्रश्न पर शास्त्रानुसार व्यवस्था बतलानेकी फीस ११) रुपया। शुद्ध विवाहमुहूर्त और ग्रहमेलापक (कुण्डली मिलान) का ५) रुपया। सामान्य प्रश्न २) रुपया।

व्यापारके चान्स—

चांदी, सोना, रुई, गुड़, तिलहन आदिके अनुभव-सिद्ध लम्बी लाइनके अनुभूत पक्के चान्स वर्षभर में कभी-कभी एक दो बार ही आते हैं—ऐसे समयों पर यदि पहलेसे ही सावधान होकर अपनी ग्रह-दशाके अनुकूल होने पर व्यापार किया जाये तो अवश्य लाभ होता है। जो व्यापारी इस प्रकार की सीधी लाइनों से लाभ उठाना चाहते हों वे सज्जन अपनी कुण्डलीके साथ २५) रुपया पेशगी नीचे लिखे पते पर हमारे कार्यालय में भेज कर स्थाई ग्राहकों में नाम लिखाकर रसीद प्राप्त कर ले, समय पर उन्हें लाभदायक चान्स भेजा जायगा। जो सज्जन हमसे प्रत्यक्ष मिलना चाहें वे जवाबी पत्र भेजकर मिलने की तिथि (तारीख) पहले ही निश्चित कर ले।

अन्य प्रत्येक कार्यकी आधी फीस मनीआर्डर द्वारा पत्रके साथ ही भेजना आवश्यक है। बिना प्रारम्भिक (एडवान्स) प्राप्त हुए कार्य आरम्भ नहीं किया जायेगा। उत्तर प्राप्त करनेके लिए जवाबी कार्ड भेजना आवश्यक है।

पताः—हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य
अध्यक्ष श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग-ज्योतिष-कार्यालय, सोलन (शिमला)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि आप घर बैठे ज्योतिषकी अद्भुत ज्ञान प्राप्ति द्वारा
भविष्य का सच्चा वृत्त जानकर धर्मार्थकाममोक्ष का
सम्पादन करना चाहते हैं तो—

वार्षिक मूल्य ४) रुपये **'श्रीस्वाध्याय'** एक प्रतिका १।) रुपया

अवश्य पढ़िये

संस्थापक—सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य श्री १०८ अमृतवाग्भवजी

सम्पादक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य।

उपसम्पादक—साहित्यरत्न श्री पं० भवानीशंकर त्रिवेदी शास्त्री B. A.

यह एक सांस्कृतिक पत्र है। ज्योतिष-विज्ञान में तो इसने संसार को चकित कर दिया है। इसमें मोक्ष, धर्म, अर्थ काम तथा इतिहास नामक पांच स्तम्भ रहते हैं। इसकी भविष्यवाणियां और प्रत्येक वस्तुकी तेजी मन्दी तो अत्यधिक प्रशंसनीय हो रही हैं। इसमें सभी विषयों पर सारगर्भित सुन्दर लेख होते हैं।

राष्ट्रवाद, राजनीति, ऐतिहासिक-अनुसन्धान, तथा ज्योतिष आदि विषयों पर इतनी सुन्दर सामग्री, अन्य पत्रों में कहीं नहीं मिलती। भारतके धुरन्धर विद्वानों राष्ट्रीय नेताओं और पत्र पत्रिकाओंने इसकी मुक्तकंठसे प्रशंसा करके प्रत्येक शिक्षित व्यक्तिके लिये एक प्रति अपने पास रखना परमावश्यक बताया है। यह पत्र दश वर्षों से निरन्तर राष्ट्र सेवा लगन से कर रहा है। राष्ट्रवादका तो यह प्रधान सहयोगी पत्र है। वर्षारम्भमें सुन्दर सचित्र विशेषाङ्क (नववर्षाङ्क) प्रतिवर्ष विजयादशमी पर प्रकाशित होता है। नमूनाकी प्रति बिना मूल्य किसी को भी नहीं भेजी जायगी। एक प्रति वी० पी० द्वारा भी नहीं भेजी जाती, १।) मनी आर्डरसे प्राप्त होना चाहिए।

व्यवस्थापक :—

श्रीस्वाध्याय सदन सोलन (शिमला)

मुद्रक—सरस्वती प्रेस जोगीवाड़ा दिल्ली।